मेहनतकशों का पैग़ाम
मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha365@gmail.com
www.mazdoormorcha.com
Postal Reg. No. L-2/FBD/463/2020-22 /R.N.I. No. 66400/97

बिना बरसात के ओल्ड फ़रीदाबाद रेलवे अंडरपास में जलभराव 3
मुख्यमंत्री के सात साल में कंगाल बना हरियाणा 4
गुजरात दंगे में व्यापक साजिश का कोई साक्ष्य नहीं 5
किसान आंदोलन ने खेती-किसानी को राजनीति का सर्वोच्च एजेंडा बना दिया 6
बैठकों व घोषणाओं से आगे बढ़ना होगा, सीपी साहब 8

वर्ष 36 | अंक 04 | फरीदाबाद | 5-11 दिसम्बर 2021 | फोन-8851091460 | 3.00 ₹

नगर निगम को कर कंगाल, अफ़सर हो रहे मालामाल

फ़रीदाबाद (म.मो.) जर्जर सड़कें, उफ़नते सीवर, गंदगी से बजबजाती गलियां, पीने को पानी नहीं, किसी भी काम के लिये निगम के पास पैसा नहीं, हर वक्त रोना कंगाली का। सोचने की बात है कि करदाता द्वारा दिया जा रहा हज़ारों करोड़ रुपये आखिर जा कहां रहा है? यह सब जा रहा है अफ़सरों, नेताओं व ठेकेदारों की जेबों में।

ऐसा ही एक अफ़सर धर्मसिंह नर्वत एसई के पद से गत वर्ष रिटायर हुआ है। मात्र डिप्लोमा पास, भ्रष्टाचार की सीढ़ी लगा कर, तमाम नियमों को ताक पर रख कर एसई के पद तक जा पहुंचा। खेड़ी कला गांव के मूल निवासी, फ़ौजी सिपाही के पुत्र एवं पौना एकड़ ज़मीन के मालिक आज सैंकड़ों करोड़ के मालिक हैं। पांच विभिन्न कंपनियों के खुद तो डायरेक्टर हैं ही, बेटे को भी तब से डयरेक्टर बनाना शुरू कर दिया था जब वह मात्र 10 साल का था। इनके लम्बे-चौड़े हिसाब किताब में से कुछ कम्पनियों व जायदादों का व्योरा जो मिल सका वह इस प्रकार है:

जगदम्बा बिल्डर्स 27 फ़रवरी 1996 को रजिस्टर हुई जिसमें इनका 10 वर्षीय पुत्र हिमांशु नर्वत डायरेक्टर बना था, जाहिर है वह तो नाम मात्र का ही था, क्योंकि पैसा धर्म सिंह की लूट का लगा था। दूसरी डायरेक्टर थी रमेश देवी जो पूर्णतया अनपढ एवं अंगूठा छाप है, वह महिपाल नर्वत, मौजूदा सीनियर टाउन प्लानर की पत्नी होने के नाते डायरेक्टर बनी थी क्योंकि महिपाल को भी अपना काला धन निवेश करना था। कम्पनी का पता विष्णु पैलेस नीलम पुल, अजरोंदा चौक फ़रीदाबाद दर्ज कराया गया। इसी पते पर इन लोगों ने विष्णु पैलेस नाम से शानदार व्यापारिक इमारत तैयार करके बेची और मोटा मुनाफ़ा कमाया। आज भी इनकी एक-एक दुकान इसमें मौजूद है।

दूसरी कम्पनी बनाई -एचएमडी इन्टरप्राइसेस एलएलपी यानी हिमांशु, मुनीष व धर्म सिंह। मुनीष इनकी पत्नी है जो शिक्षा विभाग को यथा-शक्ति लूटने में जुटी है। यह कम्पनी मकान नम्बर 478 सेक्टर 14 के पते पर रजिस्टर्ड है। करोड़ों रुपये का यह प्लॉट भी इनका अपना है। इस कंपनी का पंजीकरण 14 सितम्बर 2015 को कराया गया था। हिमांशु नर्वत, सुखी राम व अजय नर्वत इसके डायरेक्टर बनाये गये थे जो 2020 में सुखी राम व अजय की जगह बलजीत सिंह को डायरेक्टर बनाया गया। बलजीत सिंह मनशा ग्रुप का मालिक है जिसके साथ धर्म सिंह भविष्य में लम्बी पारी खेलने की योजना बना चुका था। इसी कम्पनी के नाम पर धर्म सिंह ने गुड़गांव के सुभाष चौक से पटोदी रोड तक चार सीएनजी पम्प पहले से ही लगा रखे थे। इन पम्पों के लिये जमीन की एलॉटमेंट बतौर 'हूडा' प्रशासक अनीता यादव ने तमाम नियमों को तोड़ कर किया था। इनमें हीरो हांडा चौक वाला पम्प सबसे महत्वपूर्ण कमाई वाला है।

धर्म सिंह व पत्नी मुनीश : इतनी लूट के बाद खुश होना तो बनता है

तीसरी कम्पनी मनशा इन्फ्रा एस्टेट प्राइवेट लि. के नाम से 21 जुलाई 2020 को पी-23 सेक्टर 75 फ़रीदाबाद के पते पर रजिस्टर कराई गयी। इसमें नरेश कुमार मलिक, हिमांशु और धर्म सिंह बतौर डायरेक्टर हैं। यह कम्पनी नहर पार के ग्रेटर फ़रीदाबाद में एक बड़ा टाउनशिप बनाने में जुटी है।

चौथी कम्पनी है मनशा बिल्ड कॉन प्रा.लि. जो 21 जून 2006 को उपरोक्त पते पर ही दर्ज कराया गया था और डायरेक्टर भी वही सब थे; लेकिन 2020 में धर्म सिंह के रिटायर होने के बाद उन्हें भी इसमें डायरेक्टर बना दिया गया। पांचवी कंपनी एलटीवाई फ़ार्मज़ प्रा.लि. दिनांक 5 मार्च 2014 को एससीएफ-157 सेक्टर 9 के पते पर रजिस्टर कराई गयी थी। इसमें बलजीत सिंह व हिमांशु नर्वत डायरेक्टर बने थे लेकिन पांच फ़रवरी 2021 को इसमें धर्म सिंह भी डायरेक्टर हो गये।

इन उक्त कम्पनियों के माध्यम से धर्म सिंह परिवार ने कितना काला-पीला धन बटोरा वह तो विस्तृत तफ्तीश का विषय है। फ़िलहाल इनके पास चौड़े में दिख रही सम्पत्तियां इस प्रकार हैं: सेक्टर 14 में 650 गज़ का प्लॉट नम्बर 604 पर बना कर शानदार मकान जो पत्नी मुनीष के नाम है। इसी सेक्टर में दूसरा प्लॉट नम्बर 478 जो पुत्र हिमांशु के नाम पर है। जी.एफ़. 1 विष्णु पैलेस, गांव खेड़ी के पुश्तैनी पौना एकड़ खेत की ज़मीन, गांव भतौला में अपनी मां वती के नाम पर 7 एकड़ ज़मीन 2001 में खरीदी थी जिसे त्रिवेणी बिल्डर्स को बेच दिया था। इसके एवज में एक करोड़ 30 लाख 4 हज़ार 125 रुपये वर्ष 2008 में तथा 5 करोड़ 85 लाख 16 हजार 500 रुपये सन् 2013 में दिल्ली हाई कोर्ट के माध्यम से मिले थे। इसके अलावा नम्बर 2 में लिये गये पैसे अलग से हैं जिनका कोई हिसाब नहीं होता।

मां के नाम पर सात एकड़ भतोला व 22 एकड़ ज़मीन घोड़ी गांव में खरीदी

सन् 2009 में धर्म सिंह ने 22 एकड़ ज़मीन पलवल ज़िले के घोड़ी गांव में अपनी मां वती के नाम से खरीदी थी। विदित है कि इनके फ़ौजी पिता 1962 की चीनी लड़ाई में शहीद हो गये थे। उनकी फ़ौजी पेंशन इनकी माता जी को मिलती थी जिससे उन्होंने इन्हें पाल-पोस कर डिप्लोमा करा दिया। जाहिर है उनके पास ऐसे कोई साधन नहीं थे जो वे 22 एकड़ ज़मीन घोड़ी व सात एकड़ ज़मीन भतौला में खरीद सकती। यह सारा धंधा धर्म सिंह द्वारा नगर निगम से लूटे गये धन को ठिकाने लगाने का था। जिस मां के नाम पर धर्म सिंह इतना खेल खेलता रहा उसी मां के लिये इसके घर में जगह नहीं थी, इसलिये वे अपनी बहन के घर गांव सिहोल (पलवल) में रही। इतना ही नहीं धर्म सिंह की पत्नी मुनीष वहां भी अपनी सास को धमकाने पहुंच गयी तो परिजनों ने मुनीष की डंडों से अच्छी-खासी पिटाई कर दी। मुनीष ने पुलिस बुलाई तो उल्टा सवाल उसी पर उठा कि वह यहां करने क्या आई थी? फ़िर धर्म सिंह पहुंचा और जैसे-तैसे पत्नी को वहां से निकाल कर लाया।

बेटी की पढ़ाई व शादी पर करोड़ों का खर्च

धर्म सिंह ने बेटी रिचा चौधरी को तीन साल तक कोटा से कोचिंग दिलाने के बाद महाराष्ट्र के लोनी पखरा स्थित मेडिकल कॉलेज में 1 करोड़ की पेड सीट पर एमबीबीएस में दाखिला कराया; उसके बाद दो करोड़ देकर जवाहर लाल नेहरू मेडिकल कॉलेज वर्धा से एमडी में दाखिला कराया। फ़िर सन् 2016 में उसकी शादी सूरजकुंड स्थित ताज विमांता में शाही ढंग से की जिसमें 80 लाख की ऑडी कार नं. एचआर-51-बीजे 4555 दी गयी तो साफ़ दिखाई दी बाकी जो करोड़ों का खर्च किया वह अलग से। इसी कार की बाबत जब आयकर विभाग वाले पूछताछ करने बेटी के पास पहुंचे तो उसने साफ़ कहा कि उसके पापा ने दी है। इसके बाद तो आयकर विभाग में धर्म सिंह का खाता खुल गया। जानकर बताते हैं कि इस विभाग ने उसे 17 करोड़ की पेनल्टी का नोटिस थमा रखा है।

बेटी की उक्त गाड़ी के अलावा भी इनके पास अनेकों लग्ज़री गाड़ियां हैं। इनमें से कुछ का ब्योरा हाथ लगा है जो इस प्रकार है: क्रेटा एचआर-बीजे-2624 बेटे हिमांशु के नाम, एचआर-51-बीबी 9671 नम्बर की स्विट डिज़ायर भी हिमांशु के ही नाम पर दर्ज है। इस परिवार के पास जेवरात का हिसाब लगाना आसान नहीं लेकिन अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि इनकी पत्नी मुनीष चौधरी, ज़िला मौलिक शिक्षा अधिकारी, हर समय किलो भर सोना तो अपने जिस्म पर लादे रहती हैं।

शेष पेज दो पर

निगमायुक्त की घोषणा: दुकानों के सामने न सामान रखने देंगे न रेहड़ी, अवैध निर्माणों को करेंगे सील

फ़रीदाबाद (म.मो.) दो दिसम्बर को छपे अखबारों के अनुसार निगमायुक्त यशपाल यादव ने कहा है कि दुकानों के सामने रेहड़ी खड़ी करा कर न तो दुकानदारों को सरकारी जगह का किराया वसूलने दिया जायेगा और न ही उन्हें दुकानों के आगे सामान रख कर सड़क घेरने दी जायेगी। इसके लिये वे वीडियोग्राफ़ी करा कर उचित कार्यवाही करेंगे तथा अवैध कब्ज़ों को भी हटवायेंगे। उपायुक्त महोदय यहां कोई नये नवेले तो आये नहीं हैं, जो कुछ अवैध उन्हें आज दिख रहा है उसे वह वर्षों से देखते आ रहे हैं। निगमायुक्त के साथ-साथ उपायुक्त का चार्ज भी उनके पास रहा है लेकिन एक तीनका तक भी वे तोड़ नहीं पाये अब क्या पहाड़ तोड़ेंगे?

अवैध निर्माणों व कब्ज़ों की जहां तक बात है, इनकी एक लम्बी-चौड़ी सूची यशपाल यादव ने उस समय बनाई थी जब उनके पास उपायुक्त व निगमायुक्त के चार्ज थे। 100 से अधिक ऐसे निर्माणों की पूरी सूची उस वक्त 'मज़दूर मोर्चा' ने प्रकाशित की थी। वे तमाम कब्ज़े व निर्माण आज भी न केवल ज्यों के त्यों कायम हैं बल्कि उन पर निर्माण कार्य धड़ल्ले से चल रहे हैं। इससे क्या समझा जाये? क्या इस तरह की घोषणायें केवल अवैध धंधेबाजों को धमकाने का एक जरिया मात्र है, ताकि उनसे वसूली अच्छी-खासी हो सके। इसी घोषणा में अवैध निर्माणों को ध्वस्त करने व शील करने की बात कही गई है। यह शील करने का क्या नाटक है, समझना जरूरी है। यह केवल लोक दिखावा है। आज तक लगी कोई भी शील ऐसी नहीं है जो कुछ समय पश्चात तोड़ न दी गई हो।

रेहड़ी हटाने का जहां तक ताल्लुक है, इसे बिना किसी उचित योजना के हटाया नहीं जा सकता। रेहड़ी जहां एक ओर हजारों लोगों की जीविका का साधन है वहीं उपभोक्ताओं को सस्ता सामान मिलने का जरिया भी है। इसके लिये निगमायुक्त को बाकायदा एक रेहड़ी मार्केट के लिये उचित स्थान उपलब्ध कराना चाहिये। इस तरह के स्थान चंडीगढ़ व लंदन जैसे आधुनिक शहरों में भी बनाये गये हैं क्योंकि ये आम लोगों की जरूरत है।